# प्राकृतिक पशु चिकित्सा पद्धति

हरियाणा पशु चिकित्सा परिषद् एवं
पशु पालन विभाग हरियाणा

| क्र0सं0 | विषय अनुक्रमणिका | पृ0सं0 |
|---|---|---|
| 1. | थनैला रोग (थन की सूजन) | 1 |
| 2. | मुंहखुर रोग (FMD) | 2 |
| 3. | दस्त (Diarrhea) | 3 |
| 4. | कृमि रोग (Worm Infestation) | 4 |
| 5. | थन में पानी उतरना एवं सोजिश (इडिमा) | 5 |
| 6. | थन के चेचक | 6 |
| 7. | चिचड़ (Ectoparasite) | 7 |
| 8. | बुखार (Fever) | 8 |
| 9. | जेर नहीं गिरना (रिटेंड प्लैसैंटा) | 9 |
| 10. | बांझपन की समस्या | 10 |
| 11. | विभिन्न प्रयुक्त होने वाले पदार्थ | 11-12 |

# सन्देश

यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हरियाणा पशु चिकित्सा परिषद् पंचकूला द्वारा प्राकृतिक पशु चिकित्सा पद्धति पर एक पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। वर्तमान में पशुओं के इलाज में जीवाणुनाशक और रसायनिक दवाओं का भारी मात्रा में प्रयोग हो रहा है, जिस कारण मानव व पशु स्वास्थ्य को भारी हानि हो रही है। मंहगी दवाओं की खरीद से किसानों के लिए पशुधन लाभ की बजाये घाटे का सौदा बनता जा रहा है। पशु चिकित्सा के लिए प्राकृतिक व औषधीय पौधों के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देने में यह पुस्तिका अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगी। पुस्तिका का प्रकाशन, भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से कम लागत में इलाज के प्रभावी विकल्प प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास है। मैं हरियाणा पशु चिकित्सा परिषद् को प्राकृतिक पशु चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देने हेतू पुस्तिका के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं प्रदान करता हूं।

सत्यदेव नारायण आर्य

राज्यपाल, हरियाणा

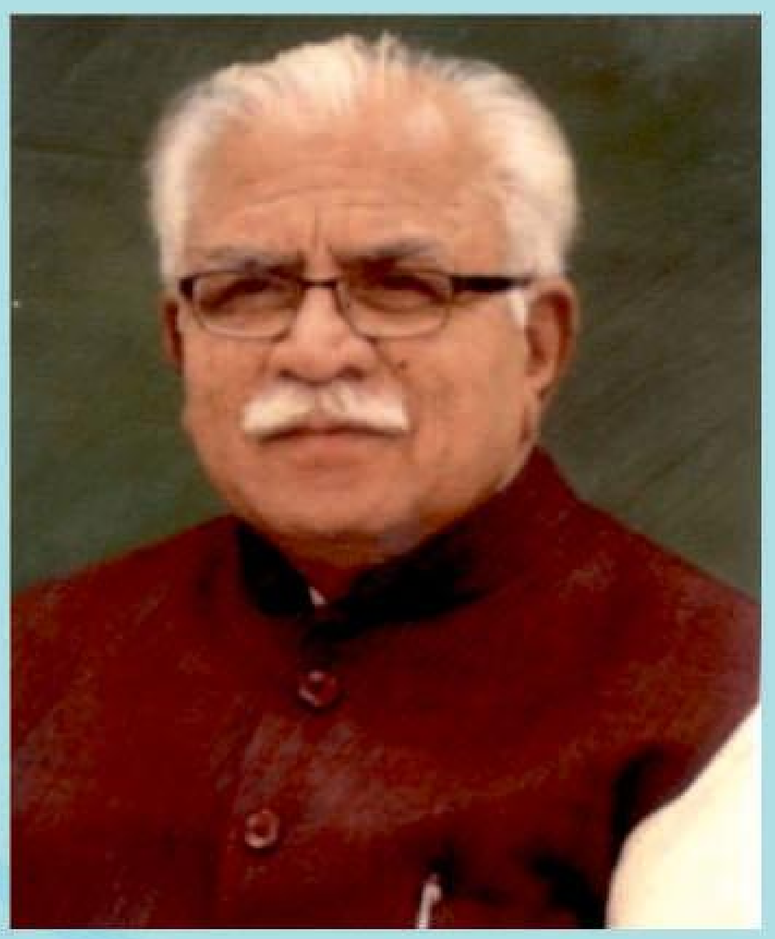

# सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हरियाणा पशु चिकित्सा परिषद् पंचकूला द्वारा प्राकृतिक पशु चिकित्सा पद्धति पर एक पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

पशुओं के इलाज के लिए अंग्रेजी दवाओं के स्थान पर प्राकृतिक रूप से उपलब्ध जड़ी–बूटियों का इस्तेमाल करने पर बल दिया जाना चाहिए क्योंकि ऐसे उपचार में दवाओं के दुष्प्रभाव की संभावना लगभग शून्य रहती है। अतः हमें प्राकृतिक पशु चिकित्सा पद्धति को प्रोत्साहित करने के प्रयास करने चाहिए।

आशा है कि इस पुस्तिका में प्राकृतिक पशु रोग निदान के लिए सामान्य रूप से उपलब्ध जड़ी–बूटियों का इस्तेमाल करने बारे दी गई जानकारी पशु चिकित्सकों, पशुधन सहायकों और पशुपालकों के लिए बहुत सहायक एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी। वे अपने पशुधन का उपचार प्राकृतिक रूप से उपलब्ध जड़ी–बूटियों से करने के लिए प्रेरित होंगें।

मैं हरियाणा पशु चिकित्सा परिषद् द्वारा प्राकृतिक पशु चिकित्सा पद्धति को लोकप्रिय बनाने के लिए की गई इस पहल की सराहना करता हूं और पुस्तिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

मनोहर लाल

**मनोहर लाल**

मुख्यमंत्री, हरियाणा

# सन्देश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति का उपयोग पशुधन रोग निदान में भी आरम्भ किया गया है तथा हरियाणा पशु चिकित्सा परिषद् पंचकूला द्वारा इस पद्धति पर एक पुस्तक का विमोचन किया जा रहा है। विभाग का प्रभारी मंत्री होने के नाते मेरे लिए यह और भी हर्ष का विषय है कि पिछले चार वर्षों के दौरान उठाए गए कदमों तथा महत्वपूर्ण निर्णयों के फलस्वरुप राज्य में पशुधन संवर्धन के साथ–साथ न केवल प्रति व्यक्ति दुग्ध उपलब्धता बढ़ी है बल्कि दूध का रिकॉर्ड उत्पादन हो रहा है । स्वस्थ पशुधन से ही हम प्रदेश का यह रिकॉर्ड कायम रख सकते हैं, इसके लिये पशुओं का सही ढंग से इलाज होना आवश्यक है ।

इस वर्ष विभाग द्वारा राज्य में पशुगणना भी की जा रही है। इस जनगणना से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग पशुधन विकास एवं रोग निदान में भविष्य की योजनाएं बनाने में किया जाएगा । ये योजनाएं प्रदेश के विकास के लिए भी अति महत्वपूर्ण हैं। अतः प्रदेशवासियों से अपील है कि वे अपने पशुधन के सही आंकड़ें उपलब्ध करवाकर प्रदेश तथा राष्ट्र् विकास के कार्य में सहयोग दें।

मुझे आशा है कि हरियाणा पशु चिकित्सा परिषद् पंचकूला द्वारा प्रकाशित की जा रही पुस्तक प्रदेश की सभी पशु चिकित्सा अस्पतालों में उपलब्ध होगी जो पशु चिकित्सकों को पशुधन रोग निदान की प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति की महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाएगी।

मैं पुस्तिका के सफल प्रकाशन के लिये अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ ।

**ओम प्रकाश धनखड़**

पशुपालन एवं कृषि मंत्री, हरियाणा

# सन्देश

हरियाणा पशु चिकित्सा परिषद् द्वारा की जा रही इस अविस्मरणीय पहल पर हम सब को बधाई। सदियों तक जिस कुदरत के साथ हम जुड़े रहे, आज हम उसे छोड़ कर अपने लघु स्वार्थ की ख़ातिर, ऐलोपैथी दवाओं की गुलामी करने लगे हैं। पशुओं से तो कोई पूछता ही नहीं और उन्हें मनचाहा टीका लगा देता है। पशु इन दवाओं के साइड इफैक्ट से जितना भी कष्ट में क्यों न हो, वह किससे कहे कि यह मुझे माफिक नही आ रही है।

और 5 से 6000 साल पुरानी हमारी सभ्यता सदा से ही पशुओं को घर के सदस्य की तरह पालती और घरेलू इलाज करती रही है। कुछ सालों के अंग्रेज़ों के राज ने हमें हमारी जड़ों से अलग कर दिया। पिछले 23 सालों से बिना अंग्रेज़ी दवा के जीने का अभ्यास करके मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि यह प्राकृतिक पशु चिकित्सा पद्धति पुस्तिका फिर से हमें हमारे मूल, यानि प्रकृति से जोड़ने का प्रयास कर रही है। प्राकृतिक इलाज हेतु जो पौधे चाहिये, हम चाहते हैं कि किसान भाई उन्हें अपने खेत में उगा लें। हमारे पशु औषधालय एवं पशु अस्पतालों में पड़ी भूमि पर कोई ग्रामवासी इन पौधों को लगा कर मुफ्त वितरण करना चाहें, या पशु स्वास्थ्य कल्याण समिति इस पर कुछ करना चाहे तो उनका भी स्वागत है ।

आईये हम सब मिल कर प्राकृतिक ढंग से पशु चिकित्सा पद्धति को आगे बढ़ाने का संकल्प करें। हम इस प्रयास को शत शत नमन करते हैं और इसे पूरा सहयोग भी देंगें।

डॉ. सुनील कुमार गुलाटी, आई.ए.एस.
अतिरिक्त मुख्य सचिव, पशुपालन एवं डेरिंग विभाग हरियाणा

# सन्देश

हरियाणा पशु चिकित्सा परिषद् द्वारा एलोपैथी दवाओं को छोड़कर प्राकृतिक पशु चिकित्सा पद्धति द्वारा पशुओं के इलाज के लिए जो पहल की जा रही है वह एक सराहनीय कदम है जिससे किसानों एवं पशुओं दोनों का हित निहित है। इस पद्धति से पशुओं का इलाज सस्ता, एंटीबायोटिक रोग–प्रतिरोध शक्ति एवं रोगाणुरोधी प्रतिरोध के दुष्प्रभाव कम होगा। इस प्राचीनकाल पद्धति में देसी जड़ी बूटियों के प्रयोग से पशुओं का इलाज सफलतापूर्वक किया जाता रहा है। पशुपालन विभाग द्वारा पशु चिकित्सक एवं पशुधन सहायक को प्राकृतिक पशु चिकित्सा पद्धति में प्रांगत करने के लिए प्रशिक्षित करने के प्रयास किये जाएंगे।

अतः हरियाणा पशु चिकित्सा परिषद् द्वारा की गई इस पहल को आगे बढ़ाने में सहयोग दें और पुस्तिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

**डॉ. हरदीप सिंह,**

आई.ए.एस.

महानिदेशक पशुपालन एवं डेरिंग विभाग,

हरियाणा

# सन्देश

इस संकलन में जीवाणुनाशक दवाओं की उच्च लागत, पशुओं के स्वास्थ्य पर विनाशकारी प्रभाव, पशु उत्पादों में जीवाणुनाशक दवाओं के अवशेष एवं सूक्ष्मजीव के लिए जीवाणुनाशक दवाओं के प्रतिरोध का उल्लेख किया गया है । भारत में एक बहुत समृद्ध और प्रभावी जातीय–पशु विज्ञान है और यह ज्ञान ग्रामीण लोगों में एवं पारम्परिक साहित्य में उपलब्ध है जो कि सरल एवं सस्ता है।

हरियाणा पशु चिकित्सा परिषद् द्वारा यह संकलन भारतीय पशु चिकित्सा पद्धति के द्वारा इलाज के लिए पशु चिकित्सकों एवं पशुपालकों के ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होगा एवं मैं उनके प्रयास की सराहना करता हूँ । आज के इस युग में यह एक नितांत आवश्यकता है ।

डॉ. शक्ति सिंह
अध्यक्ष
हरियाणा पशु चिकित्सा परिषद्

# प्राक्कथन

आज के आधुनिक युग में दुग्ध कांति की दौड़ में विदेशी नस्लों के आगमन के साथ एवं भारी मात्रा में जीवाणुनाशक, रासायनिक दवाओं के प्रयोग से मनुष्यों में दवा निरोधक क्षमता में वृद्वि हो रही है । थनैला रोग भारत में 100 गुना से भी ज्यादा बढ़ गया है जिसके इलाज में भारी मात्रा में जीवाणुनाशक दवाओं का प्रयोग हो रहा है जिस कारण मानव व पशु स्वास्थ्य को भारी हानि हो रही है । इन मंहगी जीवाणुनाशक दवाओं की खरीद के कारण किसानों के लिये पशु एक लाभ की बजाए हानि का कारण बनता जा रहा है । थनैला रोग पीड़ित पशुओं के कारण बेसहारा गौवंश में अत्याधिक वृद्वि हो रही है। आज इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय चिकित्सा पद्धति का प्रयोग प्रसांगिक बनता जा रहा है व आवश्यकता है कि कम कीमत में जड़ी बूटियों के प्रयोग से पुरानी श्वसन, थनैला, मुंहखुर रोग, त्वचा एवं प्रजनन सम्बन्धी बीमारियों का इलाज किया जा सके । भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यकम में पारम्परिक चिकित्सा प्रणालियों को एकीकृत करने में कदम उठाए जा रहे हैं । भारतीय पशु चिकित्सा में पुराने समय से विभिन्न जड़ी बूटियों का प्रयोग किया जाता रहा है । यह संकलन पशु चिकित्सकों एवं पशुपालकों को भारतीय चिकित्सा पद्धति से कम लागत में इलाज एवं जीवाणुनाशक के प्रयोग से बचाने एवं पशु चिकित्सा दवाओं के प्रभावी विकल्प के रुप में प्रस्तुत करने का एक छोटा सा प्रयास है ।

Ckadian

**डॉ. चिरन्तन कादयान**
रजिस्ट्रार
हरियाणा पशु चिकित्सा परिषद्

# 1. *थनैला रोग (थन की सूजन)*

## दवा बनाने की विधि एवं आवश्यक सामग्री

250 ग्राम देसी ग्वारपाठा के किनारे से कांटों को हटाकर छोटे–2 टुकड़ों में काटकर 50 ग्राम पिसी हल्दी एवं 10 ग्राम चूना को मिक्सर/ग्राईंडर में पीस कर पेस्ट बना लें । इस पेस्ट के 8 बराबर हिस्से बनाकर दिन में 8 बार थनों पर लगाएं ।

## लगाने की विधि :

पहले थन को धोएं । उसके पश्चात् थन से दूध निकालें । पेस्ट के एक हिस्से में 100 मिलीलीटर पानी मिलाकर प्रभावित थन पर लेप करें । हर एक घंटे पश्चात् थन धोकर खाली कर उक्त लेप दोहराएं। यह आवेदन 5–7 दिन तक जारी रखें। रात में प्रभावित थन पर 250 ग्राम तिल का तेल, 10 ग्राम हल्दी एवं 10 पोथी लहसुन का मिश्रण लगाएं । यह तीनों पदार्थ मिलाकर गर्म करने के बाद ठंडा कर मिश्रण प्रयोग किया जाए । यह लगाने से पहले, थन धोकर पूरी तरह से सुखा लेना चाहिए ।

# 2. मुंहखुर रोग (FMD)

<u>दवा बनाने की विधि एवं आवश्यक सामग्री</u>

(क) जीरा 10 ग्राम, मेथी 10 ग्राम व काली मिर्च 10 ग्राम को एक घंटे के लिए 100 मिली लीटर पानी में भिगों दें । 10 ग्राम हल्दी (पिसी) एवं 4 पोथी लहसुन मिलाकर पीस लें । इसके पश्चात् 125 ग्राम गुड़ एवं एक नारीयल (कस कर) मिलाएं। यह बड़े जानवरों के लिये एक खुराक है एवं चार भेड़ बकरी के लिए पर्याप्त है। यह एक खुराक दिन में तीन बार ताजा बनाकर खिलाएं। यह उपचार 5 दिन तक करें ।

(ख) पैरों के छावों के लिए उपचार – 10 ग्राम लहसुन, एक मुट्ठी नीम के पत्ते, 20 ग्राम हल्दी (पिसी हुई), एक मुट्ठी मेहंदी के पत्ते, एक मुट्ठी तुलसी के पत्ते 250 ग्राम नारीयल के तेल में उबालकर ठंडा करें । एक सूखे साफ कपड़े से पैर साफ कर घाव ठीक होने तक लगाएं । घाव में कीड़े होने पर कपूर इसी तेल में मिलाकर लगाएं । कीड़े मरने के पश्चात् कपूर रहित तेल लगाएं ।

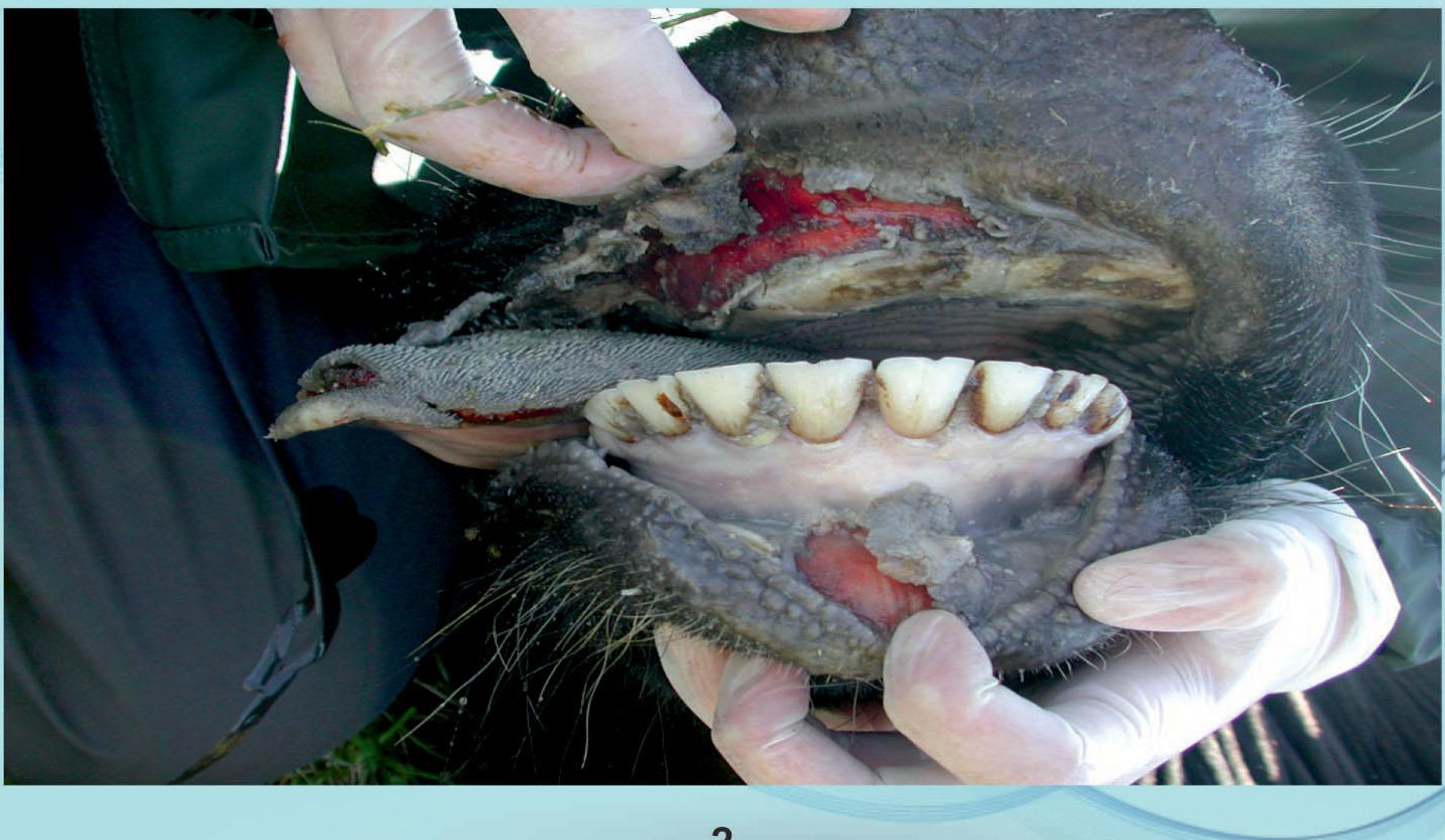

# 3. दस्त (Diarrhea)

<u>दवा बनाने की विधि एवं आवश्यक सामग्री</u>

(क) 100 ग्राम जीरा, 5 ग्राम हींग, 5 ग्राम काली मिर्च व 100 ग्राम मेथी को तवे पर गर्म करने के बाद ठंडा करें एवं पीस कर पाउडर बना लें ।

एक प्याज, 4 पोथी लहसुन एवं एक मुट्ठी कढीपत्ता को मिलाकर पेस्ट बना लें । पिसा हुआ पाउडर एवं पेस्ट को मिलाकर 100 ग्राम गुड़ में मिलाकर गोली बनाकर पशु का खिलाएं । आवश्यकता पड़ने पर दूसरे दिन भी ताजा बनाकर खिलाएं ।

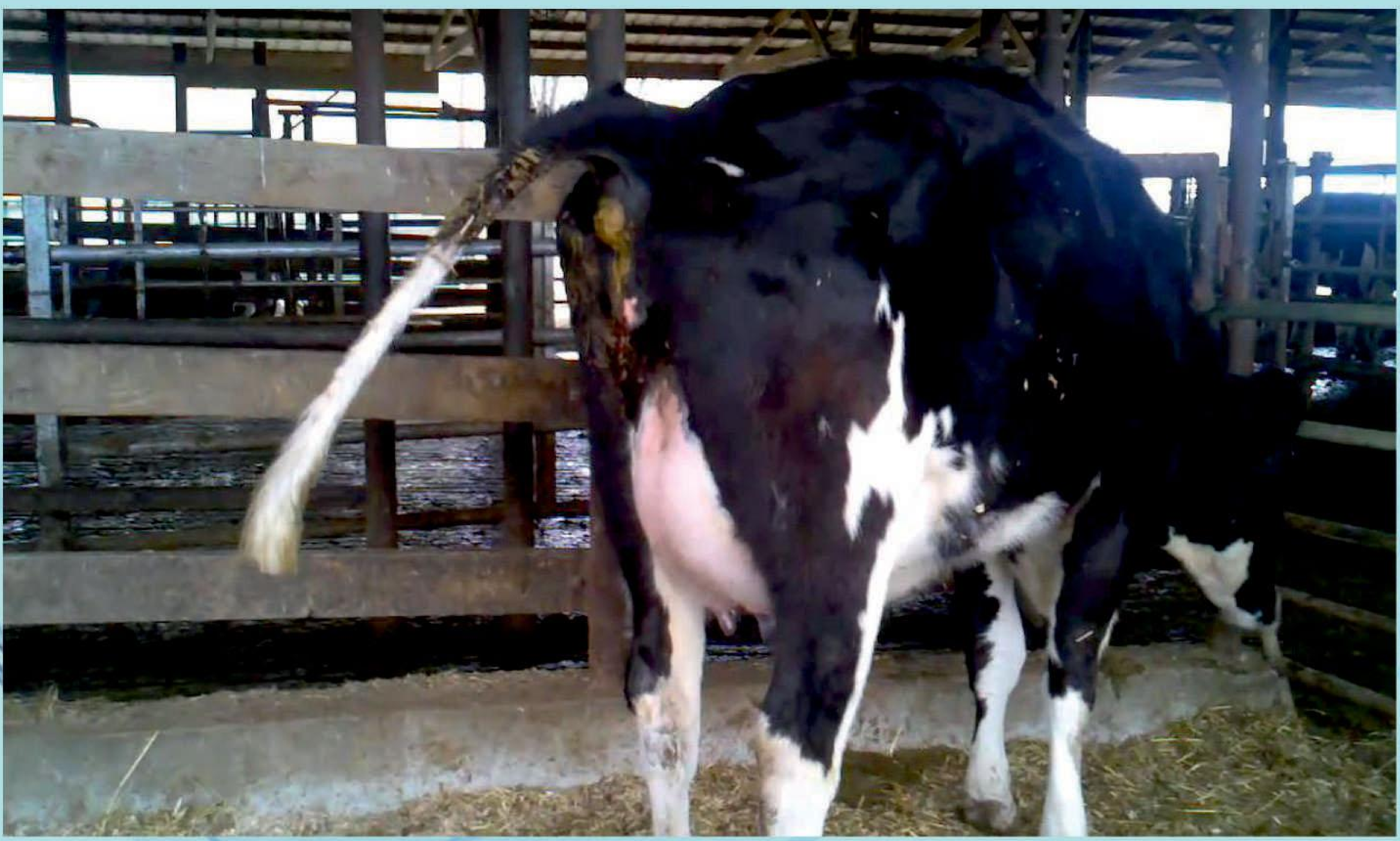

# 4. कृमि रोग (Worm Infestation)

<u>दवा बनाने की विधि एवं आवश्यक सामग्री</u>

**25 ग्राम जीरा, 10 ग्राम सरसों के बीज, 5 काली मिर्च के बीज को पीसकर, 5 पोथी लहसुन, 5 ग्राम हल्दी (पिसी हुई), 50 ग्राम करेला, 100 ग्राम केले के तने को 150 ग्राम गुड़ में मिलाकर गोली बना लें । यह गोली पशु की जीभ पर रगड़ें । यह एक दिन की खुराक है । यह ताजा तैयार कर उपयोग करें ।**

# 5. थन में पानी उतरना एवं सोजिश (इडिमा)

## दवा बनाने की विधि एवं आवश्यक सामग्री

तिल अथवा सरसों का 200 मिली लिटर तेल गर्म करके उसमें 1 मुट्ठी हल्दी पाउडर एवं 2 कलियाँ बारीक काटा हुआ लहसुन डालें । मिश्रण को अच्छे से मिलाएं एवं सुगंध आने पर आंच से उतार लें ( उबालने की आवश्यकता नहीं है ) मिश्रण को ठण्डा होने दें । इस मिश्रण को सूजन वाले हिस्से या पूरे थन पर दबाव के साथ गोल घुमाते हुए लगाएं । इसे 3 दिन तक प्रतिदिन 4 बार प्रयोग करें ।

नोटः इस विधि को प्रयोग में लेने से पूर्व सुनिश्चित कर लें कि पशु को थनैला रोग नहीं है ।

# 6. थन के चेचक

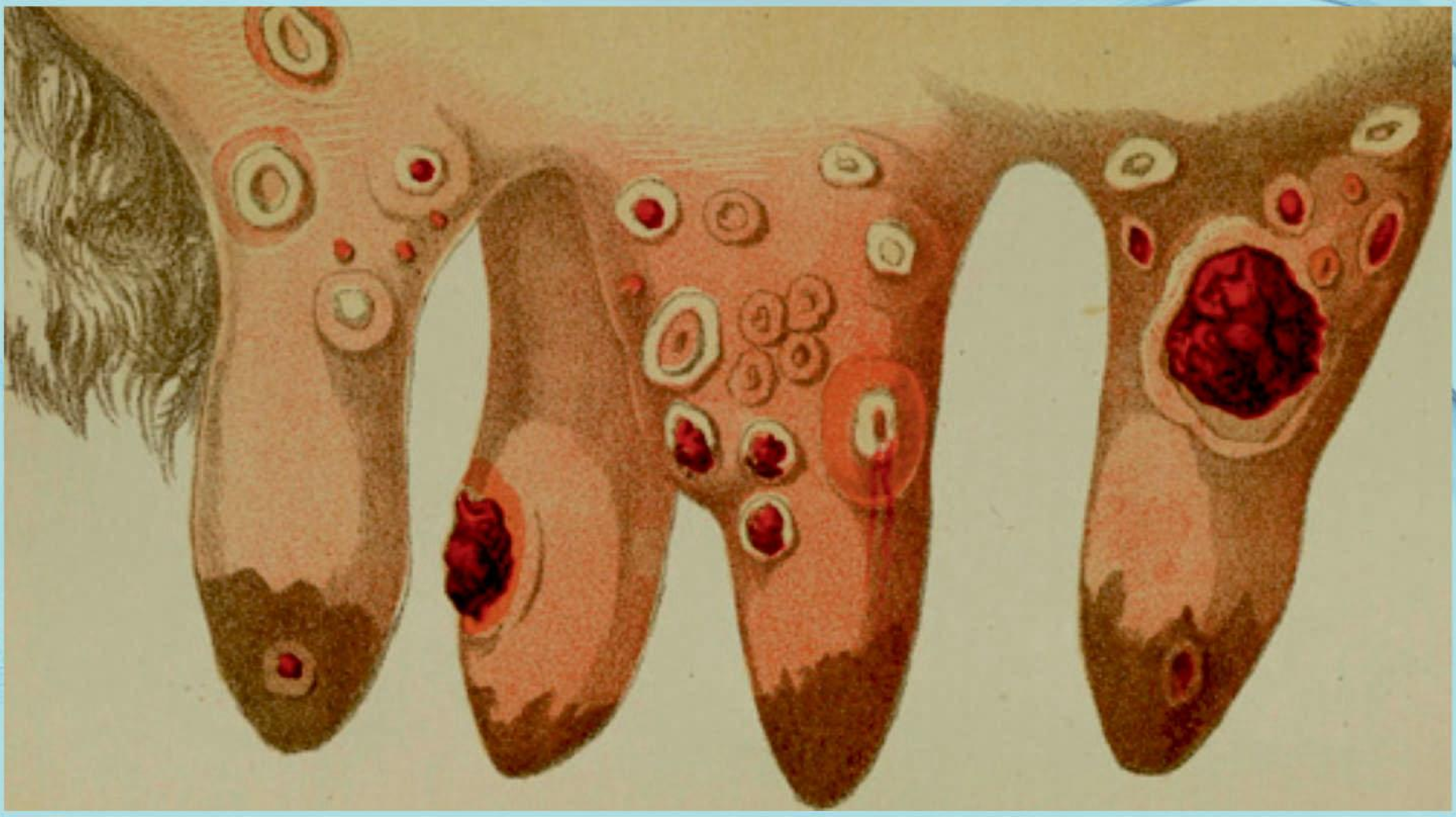

<u>दवा बनाने की विधि एवं आवश्यक सामग्री</u>

**एक घंटे के लिये 25 ग्राम जीरा भिगो लें एवं 10 पोथी लहसुन, 10 ग्राम हल्दी (पिसी हुई), 25 ग्राम जीरा और 15 पत्ते तुलसी के पीस लें, इस पेस्ट मे 50 ग्राम आलूनी घी (देसी मक्खन) मिलाकर पेस्ट बनाएं । थन साफ कर प्रभावित थन पर उपयोग करें । यह प्रत्येक बार ताजा बना कर प्रयोग करें ।**

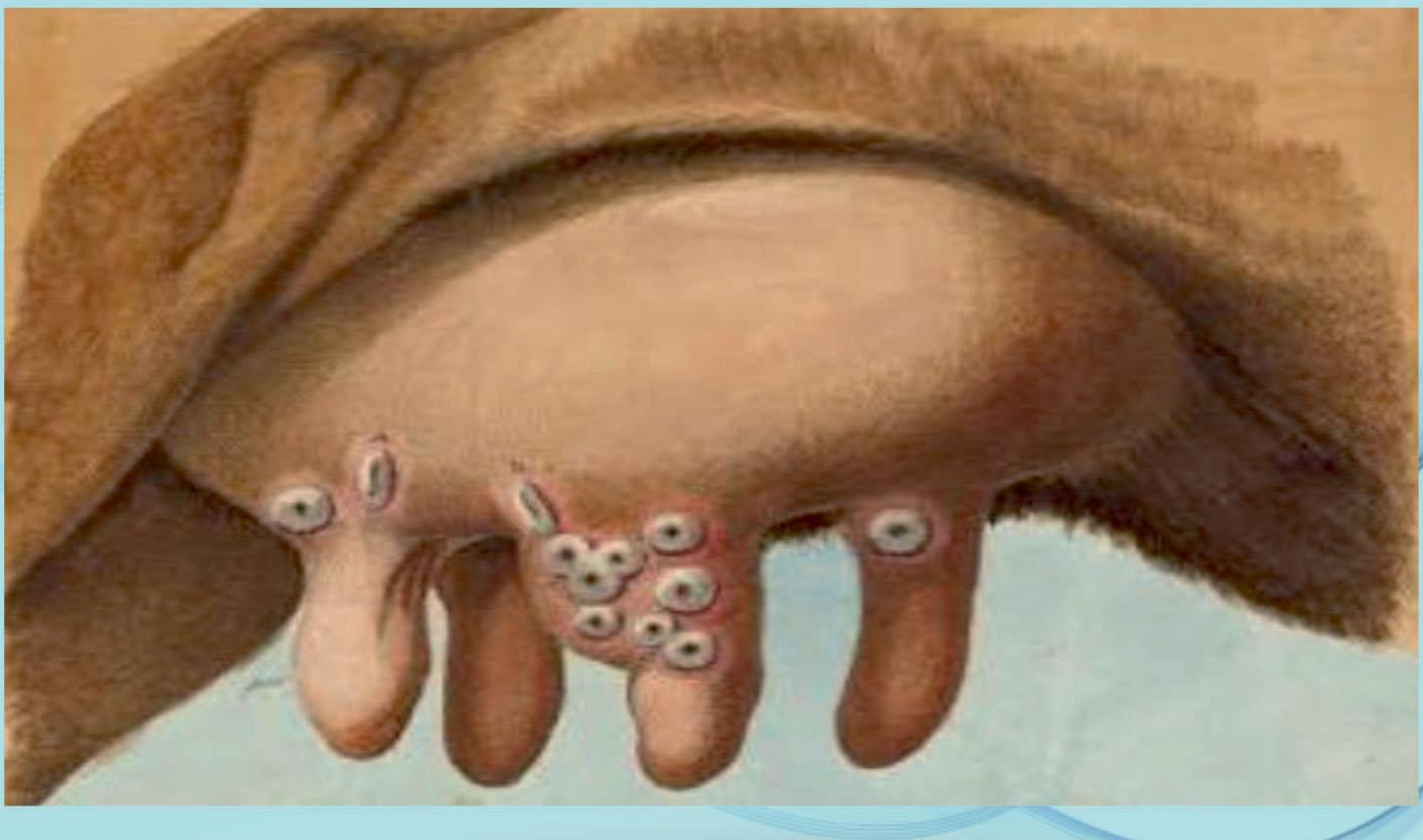

# 7. चिचड़ (Ectoparasite)

## दवा बनाने की विधि एवं आवश्यक सामग्री

**10 ग्राम घोरबच (हिन्दी में बाच), 10 पोथी लहसुन, एक मुट्ठी नीम के पत्ते, 20 ग्राम हल्दी और एक मुट्ठी काली तुलसी के पत्ते मिलाकर पीस लें उसके पश्चात् एक लीटर पानी में मिलाकर कपड़े से छानकर एक कपड़े में भिगोकर पशु के बालों पर लगाएं । यह घोल अगले दिन आवश्यकता पड़ने पर लगाएं । यह हर बार ताजा बना कर प्रयोग करें ।**

# 8. बुखार (Fever)

<u>दवा बनाने की विधि एवं आवश्यक सामग्री</u>

**10 ग्राम जीरा एवं 5 ग्राम काली मिर्च को एक घटें के लिये 50 मिलीलीटर पानी में भिगो दें । 2 प्याज, 5 पान के पत्ते एवं 20 ग्राम कालमेघ के पत्ते एवं 100 ग्राम गुड़ मिलाकर उसकी गेंद बनाकर पशु की जीभ पर लगाएं । आवश्यकता पड़ने पर दूसरे दिन भी लगाएं । इस का प्रयोग ताजा करें ।**

# 9. जेर नहीं गिरना (रिटेंड प्लैसैंटा)

<u>दवा बनाने की विधि एवं आवश्यक सामग्री</u>

**प्रयोग की विधिः**

**ब्याने के 2 घण्टे के अन्दर पशु को एक पूरी मूली खिला दें। अगर पशु ब्याने के 8 घंटे बाद तक भी जेर नहीं गिराता है तो 1.5 किलो ताजी भिंडी को नमक एवं गुड़ के साथ पशु को खिला दें । अगर पशु ब्याने के 12 घंटे बाद तक भी जेर नहीं गिराता है तो पशु के शरीर के एकदम पास में जेर में गांठ बांध दें और गांठ के 2 इंच नीचे से इसे काटकर छोड़ दें । गांठ पशु के शरीर के अन्दर चली जाएगी । हाथों से जेर निकालने का प्रयास कभी नहीं करें । 4 सप्ताह तक, सप्ताह में एक बार पशु को एक मूली खिलाएं ।**

# 10. बांझपन की समस्या

## दवा बनाने की विधि एवं आवश्यक सामग्री

**प्रयोग की विधि :**

मद चक के पहले या दूसरे दिन उपचार शुरु करें । दिन में एक बार नीचे दिये गए कमानुसार गुड़ या नमक के साथ ताजा अवस्था में खिलाएं: 1 मूली रोजाना 5 दिन तक, ग्वारपाठा/घृतकुमारी की 1 पत्ती रोजाना 4 दिन तक, सहजन की 4 मुठ्ठी पत्तियॉ रोजाना 4 दिन तक, मुट्ठी हडजोड़ के तने रोजाना 4 दिन तक, रोजाना 4 मुठ्ठी करी पत्तियॉ हल्दी के साथ मिलाकर 4 दिन तक पशु को खिलाएं, अगर पशु गाभिन नहीं होता है, तो यह उपचार एक बार फिर दोहराएं ।

# 11. विभिन्न प्रयुक्त होने वाले पदार्थ

ग्वारपाठा (Aloe Vera)

हल्दी पाउडर (Turmeric Powder)

चूना (Calcium Hydroxide)

जीरा (Cumin)

मेथी के बीज (Fenugreek Seeds)

काली मिर्च (Black Pepper)

लहसुन (Garlic)

गुड़ (Jaggery)

नारीयल (Coconut)

हींग (Asafoetida)

# 12. विभिन्न प्रयुक्त होने वाले पदार्थ

सरसों के बीज (Mustard Seeds)

करेला (Bitter Gourd)

केले का तना (Banana)

प्याज (Onion)

पान का पत्ता (Betel Leaf)

कालमेघ का पत्ता
(Andrographis Paniculata Leaf)

तुलसी (Basil)

अलूनी घी (Homemade Butter)

नीम के पत्ते (Curry Leaves)

बाच (Ghorbuch)

# हरियाणा पशु चिकित्सा परिषद् पंचकूला के सदस्यों की सूची

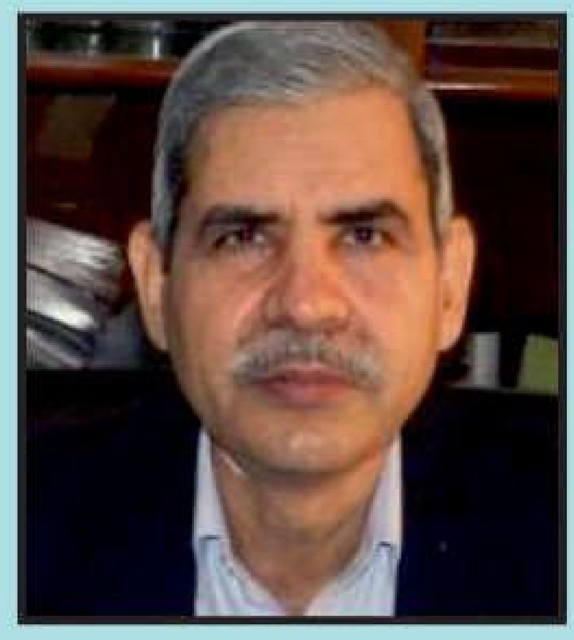

**डॉ. हरदीप सिंह**
आई.ए.एस.
महानिदेशक पशुपालन एवं डेरिंग विभाग हरियाणा
फोनः 0172–2574662

**डॉ. शक्ति सिंह**
अध्यक्ष
मो. 9896046277

**डॉ. चिरन्तन कादयान**
रजिस्ट्रार
मो. 8168666817

**डॉ. दिवाकर शर्मा**
डीन
पशु चिकित्सा विज्ञान कॉलेज
मो. 9466263443

**डॉ. दलीप सिंह**
सदस्य
मो. 9812413270

**डॉ. श्रीभगवान**
सदस्य
मो. 9813444584

**डॉ. जगदीप यादव**
सदस्य
मो. 9416260030

**डॉ. नीलम आर्य**
सदस्य
मो. 9873557219

**डॉ. कुलवंत चाहल**
सदस्य
मो. 9896884096

**डॉ. नरेन्द्र सिंह यादव**
सदस्य
मो. 9910187277

**डॉ. धर्मवीर सिंह**
सदस्य
मो. 9466043225

# ANIMAL HEALTH CARD
# NAKUL SWASTHYA PATRA

Animal Details:

| Animal UID No. | Breed | Age | Parity |
|---|---|---|---|
| | | | |

Owner's Details:

| Name & Father's Name | Full Address | Aadhar No. | Contact No. |
|---|---|---|---|
| | | | |

Issuing Official:

| Name & Designation | Date of Issue | Contact No. | Signature |
|---|---|---|---|
| | | | |

Health Status:

De-worming :

Information if any for:

1. Lameness:
2. Mastitis:

Vaccination

| Disease | 1st Year | 2nd Year | 3rd Year | 4th Year | 5th Year |
|---|---|---|---|---|---|
| Foot and Mouth Disease (FMD) Twice a year (4 month and above, booster after one month) | | | | | |
| | | | | | |
| Hemorrhagic Septicemia (HS) Before monsoon 6 months and above Annually in endemic areas | | | | | |
| Black Quarter (BQ) Before monsoon 6 months and above annually in endemic areas | | | | | |
| Brucellosis 4 to 8 month of age- female calves once in life time | | | | | |
| Any other Vaccines | | | | | |

Breeding Details:

| Sr. No. | Date of AI/NS. | Date of Calving | Sex of Calf | Sr. No. | Date of AI/NS. | Date of Calving | Sex of Calf |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | |

## तालिकाः दुधारू भैंसों को दूध उत्पादन राशन वितरण

| दूध की मात्रा | विभिन्न विकल्प | हरा चारा | हरा चारा मात्रा (कि.ग्रा.) | सूखा चारा (कि.ग्रा.) | दाना मिश्रण (कि.ग्रा.) |
|---|---|---|---|---|---|
| 8.0 | 1 | हरी जई मक्का ज्वार | 40-50 | - | 2.0 |
| | 2 | बरसीम | 50-60 | 2.0 | 1.0 |
| | 3 | हरा चारा | 10 | 5.0 | 5.0 |
| 10.0 | 1 | हरी जई मक्का ज्वार | 45-60 | - | 6.0 |
| | 2 | बरसीम | 60-65 | 2.0 | 3.5 |
| 15.0 | 1 | हरी जई मक्का ज्वार | 45-60 | - | 8.0 |
| | 2 | बरसीम | 60-65 | 4.0 | 5.0 |

## सम्पर्क सूत्र


इन चिकित्सा पद्धति के निम्न विशेषज्ञ से दूरभाष पर विचार विमर्श किया जा सकता है :–

1. डा0 एम. एन. बी. नाय्यर – 09448865184
2. डा0 एस. के. कुमार – 09845103838
3. डा0 पूनियामूर्ति – 09842455833
4. डा0 सतीश – 09840885192


## आभार


यूनिवर्सिटी ऑफ ट्रांस–डिसप्लनेरी
हेल्थ सांइस एंड टेक्नोलोजी
बेंगलुरू–560064
वेबसाइटः http://tdu.edu.in/